निर्भयता

दृढ़ निश्चय वाला व्यक्ति सदा निर्भय रहता है हर कार्य बहुत ही हिम्मत से करता है। कार्य चाहे जितना भी कठिन हो परन्तु निराश नहीं होते हौसला बुलन्द और आत्मविश्वास से कार्य को पूरा करता है। इंसान अपने आत्मविश्वास की मजबूती से पहाड़ की चोटी पर चढ़ जाता है, और चन्द्रमा आदि ग्रहों पर राकेट पर चक्कर लगाता है। समुद्र की गहराई भी नाप लेता है। मन की मजबूती से हिम्मत भी आती है। निर्भय भी बन जाते है उसके लिए आत्मा परमात्मा तथा सृष्टि चक्र के ज्ञान की बहुत बड़ी आवश्यकता है। मान लिजिए मृत्यु का डर है किसी के साथ बड़ी दुर्घटना हो जाती है या कोई बड़ा रोग हो जाता है डाक्टर ने जबाब दे दिया है। और व्यक्ति घबरा गया, मृत्यु के भय से उसकी चिन्ता ने उसे चिता बना दी। रोग ने नहीं मारा लेकिन चिन्ता की चिता पर ही अपने आपको खत्म कर दिया।

जिसको यह ज्ञान है समझ है शरीर विनाशी आत्मा अविनाशी है एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है उसमें चिन्ता की क्या बात है। समझ से मृत्यु के भय को समाप्त कर देते है। लोक लाज का भय, परिस्थितियों का भय, मनुष्यों का भय बुद्धि की कमी के कारण भय रहता है। इन सभी भय का कारण है ज्ञान बल की कमी। ज्ञान बल, निश्चय बल, मनोबल, चरित्रबल मन के अन्दर ये विश्वास जागृत हो परमात्मा जो सर्वशक्तिवान है। सारे सृष्टि का रचयिता वो मेरा रक्षक मेरा साथी है तो भय का भूत भाग जायेगा। मान लिजिए कोई शरीर पर बन्धन डालते है। मन पर तो कोई बन्धन डाल नही सकता । मन को प्रभू को याद करने से भय भाग जायेगा। परिक्षा से पार हो जायेगे। परमात्मा तो बिगड़ी को बनाने वाला है संकट हरने वाला है उसका सहारा लेने के बजाय किनारा कर लेने या उसका भरोसा करना के बजाये माया का ठोसा खाना पड़ेगा। ऐसा मरने से गोया हमी मुसीबत को बुला लेते है। आ बैल मुझे मार इसको राम क्या करे। राम तो रास्ता दिखाने वाला है, चलना तो मुझे ही है। मंजिल पर तो मुझे ही पहुँचना है। राम तो मदद करेगा लेकिन हिम्मत तो मुझे ही करनी है।

इस जीवन में हमारे उपर माया के वार तो होगे रोग, पानी, मतभेद, निन्दा, थकावट आदि आक्रमण करेंगे। यदि सावधान अडोल रहेगे तो बच जायेगें। सर्कश में देखा होगा जिसपर बर्छियां फेकी जाती है वे अगर जरा भी हिले तो घायल हो जाते है। कोई गुस्सा करता है तो डर लगता है। धनवान को चोरी का डर रहता है। इनकम टैक्स वालों का डर रहता है। यह आत्मिक कमजोरी के कारण आत्म दुर्बलता के कारण भय रहता है। महात्मा गाँधी ने कहा है कि स्थाई और सच्चा फल पाना है तो निर्भय बनना ही होगा।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com